लोचनाभ्यां पश्यति, दृश्यते ।

5. **सहयुक्तेऽप्रधाने**–यह तृतीया विभक्ति का सूत्र है । सह (साथ) या इसके अर्थवाले सार्धम् साकम्, समम् का प्रयोग होने पर अथवा इनका अर्थ ज्ञात होने पर अप्रधान शब्द से तृतीय विभक्ति लगती ह । क्रिया से सीधा जुड़ा रहने वाला प्रधान शब्द होता है । उसके साथ अप्रधा शब्द भी रह सकता है । जैसे–सीतया सह रामः गच्छति । यहाँ गच्छति क्रिया में राम प्रधान है कर्त्ता है । सह के योग से अप्रधान सीता से तृतीया हुई है । इसी प्रकार, पयसा ओदनं खादति यहाँ सह का प्रयोग नहीं है किन्तु ओदन के साथ अप्रधान वस्तु के रूप में पयस् जुड़ा हुआ है इसलिए तृतीया हुई है ।

6. **येनाङ्गविकारः**–जिस एक अंग की विकृति से पूरे अंगधारी की विकृति लक्षित हो, उसे को विशेषण दिया जाए, तो अंग वाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है । जैसे–पादेन खञ्जः (पै से लँगड़ा) । विकार एक अंग में है किन्तु खञ्ज अंगधारी को कहा जाता है । यदि पैर को ह खञ्ज कहें तो वह अभिहित होने से प्रथमा विभक्ति ग्रहण करेगा–पादः खञ्जः अस्य । अन्य उदाहरण–चक्षुषा काणः (किन्तु, काणं चक्षुः अस्य) । शिरसा खल्वाटः (किन्तु, खल्वाटं शिर अस्य) ।

(च) समासानां सामान्यपरिचयः

दो या उससे अधिक पदों को एक साथ रखना (सम्+असनम्) समास कहलाता है । यद्यपि वाक्य में भो ऐसा होता है किन्तु वहाँ सभी पद पृथक् रहते हैं । समास में वे पद एकात्मक हो जाते हैं । उनकी विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं । इसिलिए समास की परिभाषा है–**बहूनां पदानाम् एकपदीभावः समासः** । अनेक पदों का एकपद के रूप में बदल जाना समास है । सूर्यस्य उदयः – इस अभिव्यक्ति में दो पद हैं । समास हो जाने पर "सूर्योदयः" एक ही पद बन गया । यहाँ समास है ।

सभी शब्दों का सब शब्दों के साथ योग नहीं हो जाता। समास के कुछ नियम हैं। पदों के बीच अर्थगत सम्बन्ध को लेकर समास के मुख्य चार भेद होते हैं - अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि तथा द्वन्द्व। तत्पुरुष के भेद कर्मधारय और द्विगु हैं। यही मुख्य समास हैं। फिर भी नञ्, मध्यमपदलोपी, उपपद, प्रादि, अलुक् आदि समास-भेद गौण रूप से हैं। यहाँ मुख्य समासों का परिचय प्राप्त करें।

1. **अव्ययीभाव समास**—जब दो शब्द मिलकर अव्यय का रूप ले लें तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं **(अनव्ययम् अव्ययं भवति यस्मिन्)**। सामान्यतः इसमें पूर्वपद का अर्थ प्रधान होता है अर्थात् वाक्य में क्रिया से साक्षात् सम्बद्ध रहता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

समस्त पद		**विग्रह**		**अर्थ**
प्रतिदिनम्	–	दिनं दिनं प्रति	–	प्रत्येक दिन
प्रतिग्रामम्	–	ग्रामं ग्रामं प्रति	–	प्रत्येक गाँव में
यथाशक्ति	–	शक्तिम् अनतिक्रम्य	–	शक्ति के अनुसार
यथाक्रमम्	–	क्रमम् अनतिक्रम्य	–	क्रमानुसार
उपकृष्णम्	–	कृष्णस्य समीपम्	–	कृष्ण के पास
अनुरूपम्	–	रूपस्य योग्यम्	–	रूप के अनुकूल

2. **तत्पुरुष समास**—जिस समास में उत्तर पद का अर्थ प्रधान हो उसे तत्पुरुष कहते हैं **(उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः)**। जैसे गृहपतिः –गृहस्य पतिः (घर का स्वामी)। इसके दो मुख्य भेद हैं—समानाधिकरण (जब विग्रह में दोनों पदों की विभक्तियाँ समान हों) तथा व्यधिकरण (विग्रह करने पर दोनों पदों की विभक्तियाँ भिन्न हों)। समानाधिकरण होने पर इसके कई नाम

भेदों के रूप में स्वतंत्र रूप से माने जाते हैं–कर्मधारय, द्विगु, नञ् आदि ।

व्यधिकरण तत्पुरुष समास का पूर्वपद द्वितीय से सप्तमी विभक्ति तक धारण करता है । अतः विभक्ति के आधार पर इसके भेद होते हैं । जैसे–

गृहं गतः	= गृहगतः (घर गया हुआ)	–	द्वितीया तत्पुरुष
शरणम् आपन्नः	= शरणापन्नः (शरण में आया हुआ)	–	द्वितीया तत्पुरुष
धनेन हीनः	= धनहीनः	–	तृतीया तत्पुरुष
अग्निना दग्धः	= अग्निदग्धः	–	तृतीया तत्पुरुष
देशाय हितम्	= देशहितम्	–	चतुर्थी तत्पुरुष
परिवाराय सुखम्	= परिवारसुखम्	–	चतुर्थी तत्पुरुष
चौरात् भयम्	= चौरभयम्	–	पञ्चमी तत्पुरुष
ग्रामात् निर्गतः	= ग्रामनिर्गतः	–	पञ्चमी तत्पुरुष
निम्बस्य वृक्षः	= निम्बवृक्षः	–	षष्ठी तत्पुरुष
कूपस्य जलम्	= कूपजलम्	–	षष्ठी तत्पुरुष
अध्ययने मग्नः	= अध्ययनमग्नः	–	सप्तमी तत्पुरुष
धर्मे निपुणः	= धर्मनिपुणः	–	सप्तमी तत्पुरुष

कर्मधारय समास – इसमें दोनों पद समान विभक्तियों के होते हैं । प्रायः वे विशेषण और विशेष्य के रूप में रहते हैं । जैसे–प्रियं च तत् वचनम् = प्रियवचनम् ।

महान् च असौ पण्डितः	= महापण्डितः
रम्या च असौ नदी	= रम्यनदी
पुण्या च असौ नगरी	= पुण्यनगरी

कर्मधारय समास में कभी-कभी उपमान तथा उपमेय का भी योग होता है। जैसे–

चन्द्रः इव मुखम् = चन्द्रमुखम्

घन इव श्यामः = घनश्यामः

द्विगु समास–तत्पुरुष समास का पूर्वपद यदि संख्यावाचक हो तो इसे द्विगु कहते हैं। जैसे–

त्रयाणां फलानां समाहारः = त्रिफला

पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम्

त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी

सप्तानां शतानां समाहारः = सप्तशती

(द्विगु समास कहीं नपुंसकलिंग और कहीं स्त्रीलिंग हो जाता है। इसकी व्यवस्था है।)

नञ् समास–जब नञ् (न) का समास किसी सुबन्त पद के साथ होता है और निषेध अर्थ रहता है तो इसे नञ् समास कहते हैं। व्यञ्जन के पूर्व नञ् का "अ" एवं स्वर के पूर्व इसका "अन्" हो जाता है। जैसे –

न आदिः = अनादिः

न ईश्वरः = अनीश्वरः

न सुन्दरः = असुन्दरः

न प्रियः = अप्रियः

3. **बहुव्रीहि समास**–जिस समास में पूर्व या उत्तर पद का अर्थ प्रधान न होकर किसी अन्य (बाहरी) अर्थ की प्रधानता हो उसे बहुव्रीहि समास कहते है। (अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः)। वह बाहरी अर्थ विशेष्य का काम करता है और बहुव्रीहि समास का पद स्वयं विशेषण बन जाता है। जैसे–

पीताम्बरः = पीतानि अम्बराणि यस्य सः (जिस व्यक्ति के वस्त्र पीले हों । सामान्यतः विष्णु को पीताम्बर कहा जाता है यही रूढ़ अर्थ हो गया है । यहाँ न पीत प्रधान है न "अम्बर" (वस्त्र), अपितु दोनों से जुड़ा हुआ अन्य अर्थ प्रधान है । जब कोई कहे पीताम्बरं पूजयति तो क्रिया का सम्बन्ध न पीत से है न अम्बर से अपितु विष्णु ही पूजन के विषय हैं ।

बहुव्रीहि समास के विग्रह में यं सः, येन सः, यस्य सः इत्यादि लगे रहते हैं । अन्य उदाहरण–

महात्मा	= महान् आत्मा यस्य सः	= जिसकी आत्मा बड़ी हो ।
जितेन्द्रियः	= जितानि इन्द्रियाणि येन सः	= जिसने इन्द्रियों पर विजय पर ली है ।
चन्द्रमुखी	= चन्द्र इव मुखं यस्याः सा	= जिस स्त्री का मुख चन्द्रमा के समान हो ।
यशोधनः	= यशः एव धनं यस्य सः	= यश ही जिसका धन हो वह व्यक्ति ।

4. **द्वन्द्व समास** – च (और) के अर्थ में जब सुबन्त पदों का समास होता है इसे द्वन्द्व समास कहते हैं **(चार्थे द्वन्द्वः)** । इसमें जुड़े हुए सभी पदों का अर्थ प्रधान होता है । जैसे –

रामश्च लक्ष्मणश्च	=	रामलक्ष्मणौ
माता च पिता च	=	मातापितरौ
गुरुश्च शिष्यश्च	=	गुरुशिष्यौ
पत्रं च पुष्पं च फलं च	=	पत्रपुष्पफलानि

द्वन्द्व समास कभी-कभी समाहार (समूह) के अर्थ में होता है तब यह नपुंसक लिंग एकवचन में होता है । जैसे–

पाणी च पादौ च	=	पाणिपादम् (हाथ-पैर)
धनुः च शरश्च	=	धनुःशरम्
गंगा च शोणः च	=	गंगाशोणम्

समाहार द्वन्द्व संस्कृत की वाग्धारा (मुहावरा) के अनुसार होता है इसीलिए इसके नये उदाहरण नहीं बनते । हिन्दी में भी हाथ -मुँह, हाथ-पैर आदि ऐसे ही समाहार द्वन्द्व हैं ।

अभ्यासः

1. समास का अर्थ उदाहरण के साथ बताएँ ।
2. तत्पुरुष के भेदों का सोदाहरण परिचय दें ।
3. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए समास बताएँ– यथाशक्ति, प्रतिदिनम्, पाणिपादम्, मातापुत्रौ, चौरभयम् ।
4. सुमेलन करें –

(क) त्रिफला	(i) घन इव श्यामः
(ख) राजपुरुषः	(ii) न आदिः
(ग) अनादिः	(iii) राज्ञः पुरुषः
(घ) घनश्यामः	(iv) त्रयाणां फलानां समाहारः

5. निम्नलिखित विग्रह वाक्यों के समस्त पद लिखें –

(क) रामश्च लक्ष्मणश्च

(ख) माता च पिता च

(ग) यशः एव धनं यस्य सः

(घ) न सुन्दरः

(ङ) न ईश्वरः

(छ) प्रत्ययाः

प्रत्यय उन शब्दांशों को कहते हैं जो निर्धारित धातुओं तथा प्रतिपादिकों से जोड़े जाते हैं। धातु से जुड़ने वाले प्रत्यय "कृत्" या "तिङ्" होते हैं । प्रतिपादिक से जुड़ने वाले प्रत्यय "सुप्" तद्धित या स्त्रीप्रत्यय होते हैं । प्रत्ययों के लगने से मूल शब्द (प्रकृति) का अर्थ बढ़ जाता है । वाक्य में प्रस्तुत होने की क्षमता तो सुप् या तिङ् प्रत्यय लगने से ही होती है । "रामः गच्छति"